भारतीय राजनीति में बहुजन समाज पार्टी की विचारधारा

अयोध्या प्रसाद
शोध छात्र,
बुन्देलखण्ड विश्वविद्यालय झाँसी (उ0प्र0)
Email: ayodhyaprasad1982@gmail.com

Reference to this paper should be made as follows:

Received: 14.09.2020
Approved: 30.09.2020

अयोध्या प्रसाद

भारतीय राजनीति में बहुजन समाज पार्टी की विचारधारा

RJPP 2020,
Vol. XVIII, No. II,
pp.211-216
Article No. 26

Online available at *:*
https://anubooks.com/?page_id=6391

सारांश

मानवीय जगत में राजनीति मनुष्य का ऐसा सामूहिक प्रयास है जो जान बूझकर व्यवस्था स्थापना की दृष्टि से किया जाता है। यही प्रयास अपने समाज के लिए भविष्य के उद्देश्य तथा वर्तमान के लक्ष्य निर्धारित करता है। यही व्यवस्था अपने उद्देश्यों तथा लक्ष्यों की प्राप्ति की रणनीति तथा उन्हें प्राप्त किये जाने का मूल्यांकन भी करता है। जिस प्रकार व्यक्तिगत जीवन में स्वतंत्रता का महतव होता है। उसी प्रकार सामूहिक जीवन में राजनीतिक व्यवस्था का होता है। एक राजनीतिक व्यवस्था के अन्दर बहस और संवाद उसे जीवन्त बनाये रखते हैं तथा सरकार की जिम्मेदारी भी सुनिश्चित करते है।

अयोध्या प्रसाद

प्रस्तावना

यद्यपि मानव उत्पत्ति तथा विकास का विज्ञान यह बताता है कि मनुष्य का प्रारम्भिक जीवन घुमन्तु रहा है। ऐसी स्थिति में रीति–रिवाज तथा परम्पराएँ ही व्यवस्था को संचालित करती थी। जैसे–जैसे रीति रिवाज और परम्पराओं पर टिकी हुई व्यवस्था चरमराने लगती है। ऐसी स्थित में जो लोग कल तक आदतों के सहारे जीवन यापन करते थे उन्हें भविष्य के लिए नये मानदण्ड बनाने पड़ते हैं। यही वह स्थिति होती है; जहाँ राजनीति का जन्म होता है।

बहुजन समाज में जन्में सन्तों गुरूओं तथा महापुरूषों को बी0एस0पी0 अपना आदर्श मानती है। इनमें तथागत बुद्ध, बोधिसत्व बाबा साहब डॉ0 भीमराव अम्बेडकर, महामना ज्योतिबा राव फूले, ई0वी0 रामास्वामीनायक पेरियार, छत्रपति शाहू जी महाराज, सन्त शिरोमणि रविदास जी महाराज, सन्त गाडगे, सन्त कबीर, नारायण गुरू प्रमुख है। उपरोक्त महामानवों की विचारधारा एक समतामूलक समाज व्यवस्था को स्थापित करने की रही है। बहुजन समाज पार्टी भी देश में मनुवादी व्यवस्था के तहत जो गैर बराबरी वाली सामाजिक व्यवस्था बनी है, उसे बदलकर समतामूलक समाज व्यवस्था बनाना चाहती है। बी0एस0पी0 की राष्ट्रीय अध्यक्ष कु0 मायावती ने अपनी पुस्तक ''**मेरे संघर्ष मय जीवन एवं बहुजन मूवमेण्ट का सफरनामा**'' के भाग–2 पेज नं0 852–53 पर पार्टी की विचारधारा को स्पष्ट करते हुए आगे लिखा है कि ''इस व्यवस्था परिवर्तन में यदि सवर्ण समाज से जो लोग अपनी मनुवादी मानसिकता को छोड़कर इसमें सहयोग देते हैं तो ऐसे लोगों का पार्टी में स्वागत किया जायेगा अर्थात उन्हें बहुजन समाज की तरह हर मामले में उनकी लगन व कार्यक्षमता एंव विश्वसनीयता को ध्यान में रखकर पूरा आदर सम्मान भी दिया जायेगा। लेकिन बी0एस0पी0 की विचारधारा के बारे में एक सोची समझी राजनीतिक साजिश के तहत मनुवादी पार्टियों के लोग अक्सर यह प्रचार करते हैं कि यह पार्टी जातिवादी है। जबकि इसमें रत्ती भर भी सच्चाई नहीं है वैसे बहुजन समाज पार्टी को बनाते समय, उनको झकझोरने के लिए हम जाति की बातें जरूर करते हैं। परन्तु इसका मतलब यह नहीं कि इस पार्टी को बनाने वाले लोग जातिवादी है। सच तो यह है कि इस समाज के लोग ही जातिवाद के शिकार है और जो जातिवाद के शिकार है वे जातिवादी कैसे हो सकते हैं। हम तो अन्ततः जाति रहित समाज चाहते है। जातिवादी तो वे लगे हैं जिन्हें जाति के आधार पर फायदा पहुँचा है। जिन्हें जाति के नाम पर मान और सम्मान मिला है, उन्होंने ही इसे टिकाये रखने की हर कोशिश की है तथा उन्होंने अपनी–अपनी पार्टियाँ बनायी है जिसके माध्यम से इस जातिवाद को नये जमाने के हिसाब से टिकाये रखना चाहते हैं। जाति की बात तो हम इसलिए करते है क्योंकि बहुजन समाज के लोगों को जातिवाद से नुकसान पहुँचा है, घोर तकलीफ व अपमान मिला है वे तो जातिवाद को समाप्त करना चाहते हैं। जातिवाद जैसी बीमारी को ध्यान में रखकर ही हमें इस बीमारी का इलाज करना है, जिसका मुख्य कारण यहाँ व्याप्त मनुवाद है और इसी के इलाज के लिए यह पार्टी बनायी गयी है। उपरोक्त बातों से स्पष्ट होता है कि बहुजन समाज पार्टी किसी जाति व धर्म के खिलाफ नहीं है बल्कि ''जातिवाद'' के खिलाफ है।

मान्यवर कांशीराम ने बहुजन समाज कि विचारधारा को गति देने के लिए 6 दिसम्बर

1978 को दिल्ली में देश भर से आये शिक्षित कर्मचारियों को इकट्ठा कर एक सम्मेलन में 'बामसेफ' संगठन की विधिवत घोषणा की। तत्पश्चात 6 दिसम्बर 1981 को मान्यवर कांशीराम ने दलित शोषित समाज संघर्ष समिति अर्थात डी0एस0–4 का गठन किया। इस संगठन का मुख्य उद्देश्य दलित और शोषित समाज के अधिकारों के लिए संघर्ष करना था। तत्पश्चात मान्यवर कांशीराम ने बाबा साहब डॉ0 भीमराव अम्बेडकर जी के जन्म दिन 14 अप्रैल 1984 को अधिकारिक रूप से बहुजन समाज पार्टी का गठन किया। दिनांक 22, 23 एवं 24 जून 1984 को दिल्ली के ऐतिहासिक लाल किला मैदान में पार्टी का पहला तीन दिवसीय अधिवेशन सम्पन्न हुआ।

बहुजन समाज पार्टी की विचारधारा देश व सर्व समाज के हित में है। बहुजन समाज पार्टी इस देश में मनुवादी व्यवस्था के तहत जो गैरबराबरी वाली सामाजिक व्यवस्था बना रही है। पार्टी मनुवादी व्यवस्था को बदलकर ''समतामूलक–समाज– व्यवस्था बनाना चाहती है। बहुजन समाज पार्टी अपनी विचारधारा को निम्न रूपों में प्रदर्शित करती है।

1. सामाजिक विचारधारा।
2. आर्थिक विचारधारा।
3. राजनीतिक विचारधारा।
4. सांस्कृतिक विचारधारा।
5. शैक्षिक विचारधारा।

(1) सामाजिक विचारधारा

भारतीय समाज विश्व का एक विरल व विचित्र समाज है। जहाँ समाज के अनुरूप ही लोगों का चरित्र विकसित हुआ है। इस अप्रिय सत्य से अवगत होने के कारण ही डॉ0 भीमराव अम्बेडकर ने ''खूनी क्रांतियों'' द्वारा कोई लक्ष्य प्राप्त नहीं किया, बल्कि उनका मानना था कि गुलाम को गुलामी का एहसास करा दो वह गुलामी की जंजीर तोड़ देगा। इस क्षेत्र में मा0 कांशीराम, वामनमेश्राम व विभिन्न बहुजन संगठनों और बुद्धिजीवियों द्वारा प्रशंसनीय प्रयास किया जा रहा है। भारतीय समाज में समानता लाने हेतु डॉ0 भीमराव अम्बेडकर जी द्वारा बहुजन समाज के लोगों को उनके सामाजिक और राजनीतिक अधिकार दिलाये। इस संकल्प को आगे बढ़ाने का कार्य किया।

(2) आर्थिक विचारधारा

जहाँ तक देश में बहुजन समाज के आर्थिक पहलू का सवाल है। यह सवाल भी सीधा इस देश की मनुवादी समाज व्यवस्था से जुड़ा है। यहाँ मनुवादी–समाज–व्यवस्था के आधार पर जो गैर बराबरी भी कायम है। इसलिए बहुजन समाज पार्टी आर्थिक गैर–बराबरी को दूर करना जरूरी समझती है और हमारा यह पूरा विश्वास है कि जिस दिन इस देश में सामाजिक गैर बराबरी दूर हो जायेगी, उस दिन आर्थिक गैर बराबरी काफी हद तक अपने आप ही समाप्त हो जायेगी। इसके लिए हमें ज्यादा संघर्ष नहीं करना पड़ेगा।

आज बहुजन समाज की आर्थिक स्थिति बहुज ही दयनीय है। हमारे समाज के लोग जिस खेतों में मेहनत करके फसल पैदा करते है। उन जमीनों पर उनका मालिकाना हक नहीं होता है। तथा वे मनुवादी जमींदारों के अन्याय और शोषण के शिकार होते रहते है। इस स्थिति से तंग आकर वे अपने गाँवों को छोड़कर रोजगार और सम्मानपूर्वक जिन्दगी की तलाश में बड़े–बड़े शहरों में आ जाते है। फिर उन्हें गन्दी गन्दी बस्ती में अर्थात पुलों के नीचे नालों तथा रेल की पटरी के किनारे और अन्य गन्दे स्थानों पर जानवरों से भी ज्यादा बुरी जिन्दगी जीने के लिए मजबूर होना पडता है।

आज अपने ही देश में इन 10 करोड़ से ज्यादा लोगों की ओर किसी भी सरकार का ध्यान नहीं गया है। इस विषय पर भी बहुजन समाज पार्टी ने गहराई से विचार किया तथा उस पर अपनी सरकार में कार्य किया है।

(3) राजनीति विचारधारा

बाबा साहब भीमराव अम्बेडकर ने जाति के आधार पर अनुसूचित जाति एवं जनजाति के लोगों को उनके सामाजिक और राजनीतिक अधिकार दिलाये। जाति का सहारा लेकर ही इन्होंने सन 1931–32 में अंग्रेजो के शासनकाल में हुए ''राउण्ड टेबल कान्फ्रेन्स'' में इन वर्गों के लिए पृथक निर्वाचन की व्यवस्था करवायी लेकिन इस मुद्दे पर गाँधी जी के आमरण अनशन के कारण इन वर्गों को ''पृथक निर्वाचन'' का अधिकार खोना पड़ा। जिस तरह बाबा साहब अम्बेडकर ने पृथक निर्वाचन के लिए संघर्ष किया, ठीक उसी प्रकार संघर्ष आप क्यों नहीं करते।

बाबा साहब डॉ0 भीमराव अम्बेडकर जी ने कहा था कि–राजनीतिक सत्ता वह मास्टर चाबी है जिससे आप अपनी तरक्की और सम्मान के सभी दरवाजे खोल सकते हैं। महाराष्ट्र में बहुजन समाज के लोग लगभग 25 वर्ष से महाराष्ट्र विश्वविद्यालय का नाम बाबा साहब अम्बेडकर विश्वविद्यालय रखना चाहते थे। लेकिन वे इस कार्य में सफल नहीं हो सके। वही उत्तर प्रदेश में सत्ता की मास्टर चाबी प्राप्त करने के बाद एक नहीं अनेक विश्वविद्यालयों का नामकरण किया गया। जिसमें प्रमुख रूप से छत्रपति शाहू जी महाराज विश्वविद्यालय, कानपुर, डॉ0 भीमराव अम्बेडकर विश्वविद्यालय आगरा, महात्मा ज्योतिबा फूले विश्वविद्यालय, बरेली, गौतम बुद्ध विश्वविद्यालय नोयड़ा आदि प्रमुख है। इससे साफ जाहिर होता है कि आप ''जाति'' का अपने हित में इस्तेमाल करके राजनीतिक सत्ता की मास्टर चाबी को अपने हाथ में ले सकते है। और अपने समाज को आत्मसम्मान तथा तरक्की की जिन्दगी मुहैया करा सकते है।

(4) सांस्कृतिक विचारधारा

बहुजन समाज पार्टी ने बहुत कम समय में बहुजन समाज के जिन्दगी में कितना सुखद बदलाव लाया है। उन्हें न केवल हमने नारकीय जीवन से छुटकारा दिलाया है बल्कि उन्हें आत्मसम्मान व स्वाभिमान के साथ जीवन गुजारने का अवसर भी मुहैया कराया है। इनके साथ–साथ ऊँची जातियों में गरीब तबका किसान मजदूर व व्यापारी तथा अन्य व्यवसायों में लगे लोगों ने काफी राहत की साँस ली है। बहुजन समाज पार्टी के सत्ता मे आने से दलितों में सांस्कृतिक स्तर पर भारी बदलाव आने लगा है। लोगों ने हिन्दू देवी–देवताओं की मूर्तियों को घरों

से निकालकर नदी तालाब में डुबोना शुरू कर दिया है और उनकी जगह फूले, पेरियार, अम्बेडकर, गौतम बुद्ध, कांशीराम इत्यादी की तस्वीर लगाने लगे है।

ऐसे में बहुजन समाज पार्टी जहाँ चुनाव में एक राजनीतिक पार्टी नजर आती है। वही सामाजिक स्तर पर सामाजिक विद्रोह का दर्पण भी दिखाती है। बहुजन समाज पार्टी हमेशा उनके जीवन स्तर सुधारने तथा उनके सामाजिक आर्थिक एवं राजनीतिक अधिकारों के साथ–साथ सांस्कृतिक अधिकारों को दिलाने का प्रयास किया है।

(5) शैक्षिक विचारधारा

भारत में तथागत बुद्ध की ज्ञान धारा नवजागरण की प्रथम बेला थी। आगे चलकर बुद्ध शिक्षाओं ने मानव चिन्तन को नई दिशा प्रदान की। समतामूलक समाज के निर्माण में महती योगदान दिया है। कालान्तर में संत कबीर, सन्त रविदास, सन्त तुकाराम तथा मध्यकालीन सूफी सन्तों ने अमरगीत गा–गाकर पूरे भारतीय समाज में स्पन्दन पैदा किया है। जिससे लोगों के दिलों में प्रेम का झरना बहा है। इन महामानवों की चर्चाओं ने जीवन की प्राथमिकता ही बदल डाली। ज्ञान की इस धारा का वैश्विक प्रभाव हुआ।

बहुजन समाज पार्टी के संस्थापक कांशीराम के जीवन को विस्मरणीय बनाने के लिए मुख्यमंत्री मायावती की अध्यक्षता में 4 अगस्त 2007 को हुई मंत्री परिषद की बैठक में कई महत्वपूर्ण फैसले लिए गये। बैठक में प्रदेश के चुनिन्दें विश्वविद्यालयों में कांशीराम के विचारों के अध्ययन एवं शोधकार्य के लिए पीठ स्थापित की जायेगी और लेखन के क्षेत्र में 2.50 लाख रूपये का ''कांशीराम स्वाभिमान पुरस्कार दिया जायेगा। साथ ही यह भी निर्णय लिया गया कि माननीय कांशीराम की स्मृति में उच्च शिक्षा विभाग द्वारा उनके विचारों के अध्ययन एवं शोध कार्यों के लिए चयनित विश्वविद्यालयों में संस्कृति, भाषा व सूचना विभाग द्वारा बसपा संस्थापक के कृतियों पर विभिन्न प्रकार के साहित्यों का प्रकाशन होगा। इसके तहत 2.5 लाख रूपये की नकद राशी, स्मृति चिन्ह एवं शाल कुछ खास विभूतियों को एवार्ड के रूप में दी जायेगी। यह सभी पुरस्कार कांशीराम के जन्म दिन पर इन क्षेत्रों में विशिष्ट योगदान करने वाले लोगों को प्रदान किया जायेगा।

सामाजिक परिवर्तन लाने वाले महापुरूषों की याद में पुरस्कार योजना प्रारम्भ की गयी। दिनांक 14 अप्रैल 1997 को डॉ0 भीमराव अम्बेडकर की विचारधारा एवं कार्यों को आगे बढ़ाने के महानुभावों को प्रतिवर्ष दिये जाने वाले डॉ0 अम्बेडकर गौरव पुरस्कार की स्थापना की गयी। दिनांक 04 सितम्बर 1997 को अहिल्याबाई पुरस्कार की घोषणा की गयी जो प्रशासन तथा शासन के क्षेत्र में उत्कृष्ट कार्य करने हेतु महिलाओं को प्रतिवर्ष प्रदान किये जायेंगे। दिनांक 11 सितम्बर 1997 को संत रविदास के विचार एवं साहित्य के प्रचार प्रसार करने वाले महानुभावों को प्रतिवर्ष दिये जाने वाला सन्त रविदास स्मृति पुरस्कार की घोषणा की गयी। साथ ही साथ शिक्षा के क्षेत्र में दिया जाने वाला सर्वश्रेष्ठ शिक्षिका के नाम पर सावित्री बाई फूले पुरस्कार की घोषणा की गयी।

संदर्भ ग्रन्थ

1. डॉ0 अनुपम सोनी, डॉ0 बृजेन्द्र सिंह बौद्ध, डॉ0 राजबहादुर मौर्य, *बी0एस0पी0 विजन और मिशन,* प्रकाशक वर्ष–2016, प्रकाशक–दुसाध प्रकाशन डाइवर्सिटी हाउस, 2/1467, आदिल

नगर कल्याणपुर, लखनऊ–226022 पृ0–**78**

2. कुमारी मायावती, *मेरे संघर्षमय जीवन एवं बहुजन मूवमेंट का सुरनामा,* भाग–2, प्रकाशन वर्ष–15 जनवरी 2006, प्रकाशक : बहुजन समाज पार्टी केन्द्रीय कार्यालय, 12 गुरूद्वारा रकाबगंज रोड़ नई दिल्ली– 110001
3. एच0एल0 दुसाध, *सामाजिक परिवर्तन और बी0एस0पी0 वर्ष–2005*, प्रकाशक–सम्यक प्रकाशन, 32/3 क्लब रोड पश्चिमपुरी, नई दिल्ली।
4. सतनाम सिंह, *बहुजन नायक कांशीराम,* प्रकाशक वर्ष–2016, प्रकाशक–सम्यक प्रकाशन 32/3 पश्चिम पुरी, नई दिल्ली, –110063 पृ0–**111**
5. डॉ0 पुरूषोत्तम नागर, *आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिन्तन*, राजस्थान हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, जयपुर।
6. सुश्री मायावती जी मुख्यमंत्री उत्तर प्रदेश में बी0एस0पी0 सरकार द्वारा देश में अनुसूचित जाति/जनजाति एवं अन्य पिछड़े वर्गों में जन्में महान सन्तों, गुरूओं व महापुरूषों के सम्मान में निहित महत्वपूर्ण स्थलों व गार्डेन/पार्क आदि का संक्षिप्त परिचय, प्रकाशन वर्ष–2011, प्रकाशक : सूचना एवं जनसम्पर्क विभाग उत्तर प्रदेश।
7. मान्यवर कांशीराम, चमचा युग, प्रकाशन वर्ष–द्वितीय संस्करण–2010, प्रकाशक : सम्यक प्रकाशन 32/3 पश्चिमपुरी, नई दिल्ली–63।
8. राज किशोर, *दलित राजनीति की समस्याएँ,* प्रकाशन वर्ष प्रथम संस्करण : 2006, द्वितीय संस्करण : 2008, प्रकाशन वाणी प्रकाशन, 21–ए दरियागंज नयी दिल्ली–110002
9. ए0आर0 अकेला, *कांशीराम के साक्षात्कार,* प्रकाशवर्ष–चतुर्थ संस्करण–2007, प्रकाशक–मानक पब्लिकेशन्स प्रा0लि0 बी–7 सरस्वती कॉमप्लेक्स, सुभाष चौक लक्ष्मीनगर दिल्ली–110092
10. *नानक चन्द्र रत्तू, डॉ0 बी0आर0 अम्बेडकर संस्मरण और स्मृतियाँ* प्रकाशन वर्ष–प्रथम संस्करण (हिन्दी) 2002, प्रकाशक : सम्यक प्रकाशन, 32/3 क्लब रोड, पश्चिमपुरी चौक, नई दिल्ली–63
11. *विचार और संस्कृति का मासिक समयांतर,* ग्रन्थ शिल्पी (इडिया) प्रा0 लिमिटेड, बी–7, सरस्वती कामप्लेक्स, सुभाष चौक लक्ष्मीनगर दिल्ली–110092
12. आर0के0 सिंह, *कांशीराम और बी0एस0पी0 (दलित आन्दोलन का वैचारिक आधार),* प्रकाशन वर्ष–1994 प्रकाशक–कुशवाहा बुक डिस्ट्रीब्यूटर्स इलाहाबाद